प्रतिवेदन

काकिनाड़ा हिन्दी संगोष्ठी - "भारत के दक्षिणी राज्यों की मात्स्यिकी संवर्धन के नए आयाम"

दिनांक 15 मार्च, 2019

दिनांक 15 मार्च, 2019 भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई के काकिनाड़ा केन्द्र में "भारत के दक्षिणी राज्यों की मात्स्यिकी संवर्धन के नए आयाम" विषय पर हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस महत्वपूर्ण अवसर पर भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के निदेशक डा. गोपाल कृष्णा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. गोपी कृष्णा, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय खारापानी जलकृषि अनुसंधान संस्थान (CIBA) द्वारा की गई । डा. एस. एन. ओझा, विभागाध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प - केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान कार्यक्रम के उपाध्यक्ष एवं डा. सुनील कुमार नायक, प्रभारी वैज्ञानिक, पवारखेड़ा केन्द्र प्रतिवेदक के रूप में उपस्थित थे ।

संगोष्ठी में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से आए विद्वत वक्ताओं डा. जे. जयशंकर, डा. बिजी जेवियर, डा.यू. श्रीधर, डा. बिजी पी., डा. के.के. कृष्णाणी, डा. एस.एन. ओझा, डा. बी.के.महापात्र, डा. सी.एस. चतुर्वेदी, डा. अरुण शर्मा, डा. एच.जी. पायलन, डा. सुनील कुमार नायक एवं डा. अरुण शर्मा ने अपने पेपर का प्रस्तुतिकरण किया । पेपर प्रस्तुतिकरण के माध्यम से भारत के दक्षिणी राज्यों की मात्स्यिकी संवर्धन की संभावनाओं की तलाश की गई । वक्ताओं ने पोम्पानो मछली के संतति के उत्पादन की प्रौद्योगिकी, टयूना मात्स्यिकी में सुदूर संवेदन का अनुप्रयोग, मात्स्यिकी उत्पादों के मूल्य संवर्धन, मागुर का आनुवंशिक चयन (वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभाव्यता) आदि महत्वपूर्ण विषय पर भारत के दक्षिणी राज्यों की मात्स्यिकी संवर्धन के परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डाला ।

अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डा. गोपी कृष्णा, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने कहा कि वर्तमान में मात्स्यिकी के विकास में भारत के दक्षिणी राज्यों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है । इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आयोजित की गई हिन्दी संगोष्ठी नीली क्रांति के उददे्श्य को प्राप्त करने का सार्थक प्रयास है । मंच संचालन देवेन्द्र कुमार धरम, राजभाषा अधिकारी ने किया ।

संस्तुतियाँ

भा.कृ.अनु.प. केन्द्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान के काकिनाड़ा केन्द्र में "भारत के दक्षिणी राज्यों की मात्स्यिकी संवर्धन के नये आयाम' विषय पर आयोजित की गई संगोष्ठी में निम्नलिखत संस्तुतियाँ प्रस्तुत की गई -

1. **डा. बिजी जेवियर**, वैज्ञानिक ने कहा कि पोम्पानो मछली बढ़ती खाद्य मांग को पूरा कर सकती है । पोम्पानो मछली स्वादिष्ट, पौष्टिक एवं बाजार में अत्याधिक मांग आदि वजह से पालन योग्य मछली के रुप में जानी जाती है । उन्होंने कहा कि भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने विश्व में पहली बार भारतीय पोम्पानो मछली के अंडशावक का विकास, प्रेरित प्रजनन तथा डिंभकों का उत्पादन भी किया हैं ।
2. **डा. यू. श्रीधर**, प्रधान वैज्ञानिक ने कहा कि आंध्र प्रदेश के तट में सुदूर संवेदन तकनीक द्वारा टयूना संसाधन प्रबंधन और वेलापवर्ती प्रजातियों के दोहन की अत्याधिक संभावना है । कृत्रिम उपग्रह और प्रग्रहणोपरांत आंकडों के संयुक्त विश्लेषण का उपयोग टयूना के आवास, प्रवासन और मत्स्यन के जगह की पहचान के लिए किया जाता है । सुदूर संवेदन के माध्यम से टयूना समुच्चय की सटीक भविष्यवाणी से मत्स्यन के जगहों की तलाश में काफी समय बिताने वाले जहाजों के ईंधन की खपत कम हो जाएगी ।
3. **डा. बिजी पी.** द्वारा मात्स्यिकी उत्पादों के मूल्य संवर्धन एवं उनके निर्माण की प्रक्रिया विस्तार से प्रस्तुत की गई । इसके अंतर्गत कोटिंग की प्रक्रिया एवं विभिन्न प्रकार के लेपित उत्पाद आदि के बारे में बताया गया । इसके साथ ही उन्होंने कहा कि मछली प्रसंस्करण क्षेत्र, विशेष रुप से मीठे पानी की मछली के मूल्य संवर्धन से देश की अर्थव्यवस्था में सकारात्मतक योगदान किया जा सकता है ।
4. प्रधान वैज्ञानिक **डा. जे. जयशंकर** ने कहा कि मागुर की नस्ल का संवर्धन कृषकों के लिए और देश के पोषण स्तर के लिए आवश्यक है । उन्होंने कहा कि मागुर में अंडजनन और उसके पश्चात् उत्तरजीविता को बढ़ाने के लिए उच्चकोटि संततियों को पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न करने का प्रयास करना पडेगा । इसके साथ ही उन्होंने कई विधियां बताते हुए कहा कि

इसकी बुनियाद नस्ल सुधार कार्यक्रम (Genetic Selection of Magur) के द्वारा रखी जा सकती है । यह कार्यक्रम परिणामोन्मुख, लम्बा और ठोस होना चाहिए ।

5. **डा. एस.एन ओझा**, विभागाध्यक्ष ने कहा कि भारत में बड़े जल निकायों से लाभ प्राप्त करने हेतु मत्स्य प्रबंधन नीति को विकेन्द्रित करने की आवश्यकता है । उन्होंने उद्यमी संचालित मात्स्यिकी व जलकृषि प्रसार नीति, मात्स्यिकी एवं जलकृषि प्रसार प्रतिरुप की अभिनव अवधारणा को आरेखों के माध्यम से प्रस्तुत किया ।
6. **डा. वी. के. महापात्र**, प्रधान वैज्ञानिक ने समन्वित पशुधन-मत्स्य पालन एवं तिलापिया, जयंती रोहु, कैटफिश, मरेल, लघु देशीय मछली, सीवास संवर्धन पर प्रकाश डाला । इसके साथ ही उन्होंने पुन:संचारित जलकृषि प्रणाली (RASO System) को समझाते हुए कहा कि यह जलकृषि में किसी भी प्रजाति के बढ़ने के लिए इस्तेमाल किया जाता है ।
7. **डा. के. के. कृष्णाणी**, प्रधान वैज्ञानिक ने जलीय पर्यावरण प्रबंधन के लिए बायोरिमेडिएशन प्रणाली व जैविक उपचार (ग्रीन वाटर प्रौद्योगिकी) पर विस्तार से प्रकाश डाला ।

उपरोक्त वक्ताओं के साथ ही **डा. सी. एस. चतुर्वेदी**, **डा. अरुण शर्मा, डा. एच.जी. पायलन, व डा. सुनील कुमार नायक** ने भारत के दक्षिणी राज्यों में मत्स्य संवर्धन संबंधी अपने विचार व्यक्त किए ।